इकाई 4 सम्प्रेषण के विविध रूप

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 सम्प्रेषण के विविध रूपों का परिचय
4.3 साक्षात्कार
  4.3.1 नौकरियों के लिए साक्षात्कार
  4.3.2 साक्षात्कार के अन्य रूप
4.4 संवाद
  4.4.1 दो देशों के बीच शिखर वार्ता
  4.4.2 साहित्यिक या कला-संस्कृति विषयक संवाद
  4.4.3 साहित्यिक रचनाओं एवं फिल्म-नाटक आदि के संवाद
  4.4.4 ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संवाद
  4.4.5 व्यक्तिगत स्तर के संवाद
4.5 सामाजिक आदान-प्रदान
  4.5.1 सामान्य शिष्टाचार का आदान-प्रदान
  4.5.2 सामाजिक-सांस्कृतिक रस्मों/त्योहारों का आदान-प्रदान
  4.5.3 क्षेत्रों/प्रांतों के बीच आदान-प्रदान
  4.5.4 व्यावसायिक क्षेत्रों में आदान-प्रदान
4.6 सारांश
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप सम्प्रेषण के विविध रूपों का परिचय प्राप्त करेंगे। आप सम्प्रेषण के इन विविध रूपों को जीवन में व्यवहार में लाते हैं। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सम्प्रेषण के विविध रूपों की चर्चा कर सकेंगे
- सम्प्रेषण के विविध रूपों में अंतर कर सकेंगे; और
- सामाजिक व्यवहार में सम्प्रेषण क्षमता बढ़ा सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

हिंदी के आधार पाठ्यक्रम-02 (एफ.एच.डी.02) के खंड 1 की यह चौथी इकाई है। इस खंड में इस इकाई से पहले आप सम्प्रेषण के मूल तत्वों, सम्प्रेषण के उच्चरित एवं लिखित रूपों के साथ-साथ सम्प्रेषण से संबंधित आंगिक भाषा का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में आपको सम्प्रेषण के कुछ विशिष्ट रूपों - साक्षात्कार, सामाजिक आदान-प्रदान, संवाद आदि - से परिचित करवाया जाएगा। इस इकाई के बाद आप भाषिक एवं संवाद कला के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त करेंगे, जिसके साथ इस पाठ्यक्रम के खंड 1 की समाप्ति होगी।

जब से मानव समाज अस्तित्व में आया है या यूँ कहें कि जब से धरती पर जीवन अस्तित्व में आया है, तब से प्राणी जगत के बीच सम्प्रेषण जारी है, अन्य प्राणियों में भी सम्प्रेषण के अनेक माध्यम हैं जिनका उपयोग पशु-पक्षी करते हैं। मानव के अस्तित्व में आने, उसमें बोलने की क्षमता का विकास होने तथा उच्चरित एवं लिखित भाषा के विकसित होने से तो जैसे सम्प्रेषण के क्षेत्र में क्रांति ही आ गई। विशेष तौर पर मानव-भाषा के विकास से सम्प्रेषण के अनेक रूप अस्तित्व में आए हैं, और इन रूपों में लगातार बढ़ोत्तरी जारी है। इंटरनेट एवं वेबसाइट आदि सम्प्रेषण के निरंतर विकास की ही गवाही देते हैं।

इस इकाई में हम सम्प्रेषण के कुछ विशिष्ट रूपों की चर्चा करेंगे जिनका जीवन व्यवहार में अत्यधिक प्रयोग होता है और जिनका प्रयोग करते हुए भी हम व्याख्या नहीं कर पाते।

4.2 सम्प्रेषण के विविध रूपों का परिचय

प्राणि-जगत के विकास के साथ-साथ सम्प्रेषण के अनेक रूप विकसित हुए हैं। विशेष तौर पर भाषा के विकास से, जिसमें उच्चरित एवं लिखित भाषा (जो अपनी चित्र शैली से होती हुई कंप्यूटर तक पहुँची है) - दोनों में ही सम्प्रेषण के अनेकानेक रूप विकसित हुए हैं। यहाँ हम इस चर्चा को जीवन व्यवहार के अत्यंत सामान्य एवं मूलभूत सम्प्रेषण के रूपों की चर्चा तक ही सीमित रखेंगे।

इन मूलभूत रूपों में साक्षात्कार, संवाद एवं सामाजिक आदान-प्रदान के अनेक रूप शामिल हैं। भाषा सम्प्रेषण का आधार है। इसकी चर्चा अन्य इकाइयों में की गई है। इस इकाई में सम्प्रेषण के निम्नलिखित रूपों पर विचार किया जाएगा -

i) साक्षात्कार
ii) संवाद
iii) सामाजिक आदान-प्रदान के विभिन्न प्रकार

i) साक्षात्कार

सम्प्रेषण के इन रूपों की विस्तृत चर्चा तो इकाई के अगले भागों में की जाएगी। इस इकाई में इन रूपों का महज़ परिचय दिया जाएगा।

साक्षात्कार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच किसी विशेष संदर्भ में होने वाला वार्तालाप है। यह साक्षात्कार विशुद्ध व्यावसायिक भी हो सकता है, पूरी तरह निजी एवं घरेलू भी; यह नौकरी से संबंधित भी हो सकता है एवं राजनीति से संबंधित भी। अर्थात् साक्षात्कार का घेरा पर्याप्त व्यापक है। साक्षात्कार में एक प्रश्नकर्ता होता है जो किसी व्यक्ति से प्रश्न पूछता है। इस प्रकार, साक्षात्कार में कम से दो व्यक्तियों का शामिल होना आवश्यक है।

ii) संवाद

साक्षात्कार के समान, संवाद का भी मानव जीवन में व्यापक स्थान है। व्यावहारिक जीवन से लेकर साहित्यिक विधाओं तक में संवाद के कई रूप उभरकर सामने आते हैं। इससे संवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो जाता है। हम आपस में संवादों के जरिए ही बात करते हैं। अतः संवाद के विविध रूप हमारे सामने उभर कर आते हैं। आगे इकाई में इनपर विस्तार से चर्चा की गई है।

iii) सामाजिक आदान-प्रदान के प्रकार

मनुष्य जीवन में इतनी विविधता है कि प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक इतना सामाजिक आदान-प्रदान होता है कि मनुष्य स्वयं इस संबंध में सचेत नहीं होता। इस सामाजिक आदान-प्रदान के विशाल क्रम से कुछ अधिक प्रचलित रूपों - सामाजिक रस्मों, त्योहारों, जीवन व्यवहार के कुछ विशिष्ट रूपों में होने वाले आदान-प्रदान पर इस इकाई के अगले हिस्सों में चर्चा की जाएगी।

4.3 साक्षात्कार

जैसा कि भाग 4.2 में उल्लेख किया जा चुका है, साक्षात्कार आम तौर पर दो व्यक्तियों के बीच होने वाला परस्पर आदान-प्रदान है। इसमें एक पक्ष सवाल पूछता है और दूसरा पक्ष उसका जवाब देता है। मोटे तौर पर साक्षात्कार के पाँच सिद्धांत होते हैं -

1. औपचारिक सम्प्रेषण
2. परस्पर संवाद
3. दो पक्षों का शामिल होना
4. गंभीर विषय
5. प्रश्नोत्तर शैली

औपचारिक सम्प्रेषण

साक्षात्कार का पहला सिद्धांत यह है कि यह औपचारिक सम्प्रेषण है। दोस्तों से बातचीत करने में अनुशासन का अभाव होता है। एक साथ कई विषयों पर बातचीत होती है। खेल-कूद से लेकर राजनीति तक की बातें इसमें शामिल होती हैं। घर में भी हम अपने परिवार के सदस्यों के साथ गप्पें मारा करते हैं। परंतु साक्षात्कार में यह खुलापन नहीं होता। यह औपचारिक होते हैं। इसमें एक बंधा-

बंधाया ढाँचा होता है और प्रश्नकर्ता तथा उत्तर देने वोला व्यक्ति किसी खास विषय पर बातचीत करते हैं। अतः सामान्य बातचीत और साक्षात्कार में एक महत्वपूर्ण फर्क यह है कि सामान्य बातचीत में कोई ढाँचा नहीं होता है जबकि साक्षात्कार में एक ढाँचे के तहत विचार-विमर्श होता है।

परस्पर संवाद

साक्षात्कार में आदान-प्रदान होता है। इस आदान-प्रदान के दौरान दोनों पक्षों को एक-दूसरे की शाब्दिक और आंगिक अभिव्यक्ति का ध्यान रखना होता है। साक्षात्कार आम तौर पर आमने-सामने ही होते हैं। अतः दोनों पक्षों को एक-दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखना पड़ता है। प्रश्न के अनुरूप ही उत्तर देना चाहिए और यह कोशिश की जानी चाहिए कि प्रश्न से उत्तर देने वाला व्यक्ति आहत न हो। उत्तर देने वाले व्यक्ति को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न का ठीक-ठीक जवाब दिया जाए। अच्छा साक्षात्कार वही होता है जिसमें प्रश्न पूछने वाले और उत्तर देने वाले के बीच परस्पर आदान-प्रदान होता चलता है।

दो पक्षों का शामिल होना

साक्षात्कार का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह भी है कि इसमें दो पक्ष शामिल होते हैं। प्रश्न पूछने वाला साक्षात्कार की शुरुआत करता है और जिसका साक्षात्कार लिया जाता है वह प्रश्नों का जवाब देता है। उदाहरण के लिए, पत्रकारिता के साक्षात्कार में रिपोर्टर साक्षात्कार लेता है और अपने विषय के आधार पर प्रश्न पूछता है।

गंभीर विषय

साक्षात्कार में किसी गंभीर विषय का होना आवश्यक है। साहित्य, कला, संस्कृति, खेलकूद, चुनाव - कोई भी विषय साक्षात्कार से अछूता नहीं है। कभी साक्षात्कार सूचना इकट्ठी करने के लिए आयोजित किए जाते हैं तो कभी लोगों के विचार जानने के लिए साक्षात्कार लिए जाते हैं। इसके अलावा, लोगों को प्रभावित करने या रिझाने के लिए भी साक्षात्कार का आयोजन किया जाता है। जैसे किसी उत्पाद के विक्रेता ग्राहकों से साक्षात्कार लेते हैं। उन्हें अपने उत्पाद के बारे में बताते हैं और वे ग्राहकों को प्रभावित करने का भी प्रयत्न करते हैं ताकि वे उनका माल खरीद सकें। अतः साक्षात्कार का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है।

प्रश्नोत्तर शैली

साक्षात्कार प्रश्नोत्तर शैली में होते हैं। प्रश्न किसी खास उद्देश्य से पूछे जाते हैं। यदि आप नौकरी के लिए साक्षात्कार देने जाते हैं तो आपसे प्रश्न इसलिए पूछे जाते हैं कि चयनकर्ताओं को यह मालूम हो कि आप पद-विशेष के कितने योग्य हैं।

प्रश्न और उत्तर के बीच जितना अच्छा तालमेल होता है साक्षात्कार उतना ही सफल माना जाता है।

4.3.1 नौकरियों के लिए साक्षात्कार

साक्षात्कार शब्द के अर्थ का दायरा अत्यंत व्यापक है। आम तौर पर साक्षात्कार का नाम आते ही नौकरियों के लिए आयोजित साक्षात्कार का खाका ही दिमाग में सबसे पहले उभरता है। नौकरी के लिए साक्षात्कार के भी अनेक रूप हैं। उदाहरण के तौर पर, नौकरी के लिए ही साक्षात्कार कई तरह का होता है जैसे -

i) **प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाएँ** : आई.ए.एस, पी.सी.एस.आदि सेवाओं के लिए लिया जाता साक्षात्कार।

ii) **व्यावसायिक सेवाएँ** : डॉक्टर, इंजीनियर आदि के लिए लिया जाने वाला साक्षात्कार।

iii) **शैक्षिक सेवाओं** : अध्यापक आदि की नियुक्ति के लिए होने वाला साक्षात्कार।

ज़ाहिर है कि इस सूची में और वृद्धि की जा सकती है, लेकिन समझने की बात यह है कि अलग-अलग प्रकार की नियुक्तियों के लिए अलग-अलग प्रकार का साक्षात्कार होता है। उदाहरण के लिए, प्रतिस्पर्धात्मक सेवाओं के लिए व्यक्ति की सर्वांगीण प्रतिभा पर अधिक ध्यान दिया जाता है अर्थात् व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक पक्ष की जानकारी होनी चाहिए, भले ही यह जानकारी बहुत गहरी न हो। प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में साक्षात्कार के समय उम्मीदवारों की योग्यता के साथ-साथ उनकी तुरंत सोचने की शक्ति और वाक्पटुता की भी जाँच की जाती है। प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में चुने जाने वाले

उम्मीदवारों को बाद में अनेक कठिन एवं असामान्य, कई बार अकल्पित स्थितियों का सामना करना होता है। ऐसी स्थिति में प्रतिस्पर्धा परीक्षा के उम्मीदवार किस हद तक धैर्यवान, सहिष्णु, दीर्घ-दृष्टि रखने वाले और तेज़ी से सोच कर निर्णय ले सकने वाले हैं, उनमें स्थितियों का सामना करने में किस हद तक कल्पनाशीलता है - इन सभी बातों का परीक्षण प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में किया जाता है। इस साक्षात्कार में उम्मीदवार के बात करने का ढंग, उसकी भाषा-अभिव्यक्ति का सामर्थ्य को भी देखा जाता है, यहाँ तक कि नई भाषा सीखने की क्षमता को भी देखा जाता है। उम्मीदवार का आत्म-विश्वास भी कसौटी पर होता है।

यदि हम **व्यावसायिक सेवाओं** के लिए उम्मीदवारों के चयन के लिए साक्षात्कार को देखें तो ये साक्षात्कार प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं से कुछ भिन्नता रखते हैं। ऐसी परीक्षाओं में उम्मीदवार के क्षेत्र-विशेष में विशिष्ट ज्ञान की मौखिक परीक्षा ली जाती है। चिकित्साशास्त्र या अभियांत्रिकी का उसका ज्ञान किस हद तक गहरा है या अन्य किसी व्यवसाय की शिक्षा उसने कैसे प्राप्त की है और जीवन में उसे वह कैसे व्यवहार में लाता है, ये बातें ऐसे तकनीकी ज्ञान से जुड़े साक्षात्कारों में जानी जाती हैं।

शैक्षिक क्षेत्र - स्कूलों, कॉलेजों या विश्वविद्यालयों में नियुक्ति के लिए साक्षात्कार कुछ अलग तरह के होते हैं। यहाँ उम्मीदवार के विषय-विशेष के मूर्त एवं अमूर्त ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। इन साक्षात्कारों में माहौल अपेक्षाकृत अनौपचारिक होता है और उम्मीदवार को अपनी बात कहने के लिए खुला समय भी दिया जाता है।

अनेक सेवाओं के लिए साक्षात्कार की विशिष्ट पहचान की जा सकती है। इन साक्षात्कारों में प्रायः पाँच से सात व्यक्तियों का बोर्ड होता है, जिनमें एक व्यक्ति इस चयन समिति का अध्यक्ष होता है।

नौकरियों के लिए साक्षात्कारों से कुछ मिलते-जुलते साक्षात्कार **दाखिलों** के समय भी होते हैं। आजकल तो नर्सरी से लेकर एम.ए, पी-एच.डी. तक के पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए साक्षात्कार की बाधा को पार करना होता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि नर्सरी या प्राथमिक शिक्षा में दाखिले के समय पब्लिक स्कूलों द्वारा बच्चों के अभिभावकों (अधिकांशतः माता-पिता) का भी साक्षात्कार लिया जाता है। सो आज के युग में बच्चे का सामाजिक आदान-प्रदान शुरू ही साक्षात्कार से होता है, क्योंकि उसकी सर्वप्रथम सामाजिक गतिविधि ही उसके स्कूल द्वारा उसके साक्षात्कार से होती है। यद्यपि सरकारी स्कूलों में ऐसा नहीं होता, लेकिन बच्चे में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उसका छोटी आयु से ही साक्षात्कार की प्रक्रिया से गुज़रना अच्छी बात है।

साक्षात्कार में वास्तव में दो पक्ष हैं - दोनों पक्ष इस पन्द्रह मिनट से लेकर एक घंटे से अधिक तक के साक्षात्कार द्वारा एक-दूसरे को जानना-समझना चाहते हैं। बहुत अधिक तो एक साक्षात्कार में नहीं जाना जा सकता, लेकिन एक मोटा प्रभाव ज़रूर बनाया जा सकता है।

साक्षात्कार के दो पक्षों में एक पक्ष तो पूरी तरह दूसरे पक्ष अर्थात् उम्मीदवार तो चयन समिति के व्यवहार पर आश्रित है। चयन समिति समझदार है तो वह उम्मीदवार से थोड़े समय में ही अधिकाधिक जानकारी प्राप्त कर सकेगी। चयन समिति यदि ज्यादा समझदार नहीं है तो ज्यादा चुस्त उम्मीदवार समिति पर अपनी वाक्-कुशलता से प्रभाव डाल सकते हैं।

नौकरियों, दाखिलों या इस तरह के अन्य साक्षात्कारों में दोनों ही पक्ष - चयन समिति और उम्मीदवार - जितने अधिक परिपक्व एवं समझदार होंगे, उतना ही अच्छा चयन हो सकेगा।

4.3.2 साक्षात्कार के अन्य रूप

साक्षात्कारों की इस व्यापक रूप से स्वीकृत परिभाषा के अतिरिक्त भी साक्षात्कार के अन्य अनेक रूप प्रचलित हैं। जैसे -

i) विशिष्ट व्यक्तियों, राजनेताओं, कलाकारों, साहित्यकारों आदि से लिया जाने वाला साक्षात्कार,

ii) विवाहादि संबंध जोड़ने हेतु होने वाले साक्षात्कार

iii) चुनाव आदि के समय बिल्कुल साधारण व्यक्तियों से लिए जाने वाले साक्षात्कार

विशिष्ट व्यक्तियों से साक्षात्कार

इनमें से विशिष्ट व्यक्तियों से लिए जाने वाले साक्षात्कार अत्यंत महत्वपूर्ण एवं दिलचस्प होते हैं। ये साक्षात्कार जनसंचार माध्यम - रेडियो, टेलीविज़न आदि - के लिए भी हो सकते हैं या फिर प्रकाशन माध्यमों - समाचारपत्र, पत्रिकाओं आदि - के लिए भी। ये साक्षात्कार इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि इन्होंने एक विशिष्ट विधा का रूप ले लिया है और विश्व में कुछ साक्षात्कार लेने वाले इतने प्रसिद्ध हुए हैं कि उनकी साक्षात्कारों की किताबें दुनिया-भर में पढ़ी जाती हैं या पूरे विश्व में टेलीविज़न या फिल्म के पर्दे पर उनकी उपस्थिति दर्ज होती है। विश्व के सबसे महत्वपूर्ण राजनेताओं का साक्षात्कार लेने के कारण इटालियन पत्रकार ओरियाना कैलेसी बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। चीन के महान नेता माओ त्से तुंग के साक्षात्कारों के लिए एडगर स्नो बहुत प्रसिद्ध हुए। भारत में ऐसे साक्षात्कारों के लिए सिम्मी ग्रेवाल (स्टार प्लस), राजीव धवन, सईद नकवी आदि प्रसिद्ध नाम हैं। 'जनता की अदालत', 'आपकी अदालत' जैसे टेलीविज़न कार्यक्रमों में भी इस प्रकार के साक्षात्कार दिखाए जाते हैं।

राजनेताओं के साक्षात्कारों के अतिरिक्त, कलाकारों और साहित्यकारों के साक्षात्कार भी प्रसिद्ध हैं। इन साक्षात्कारों को लेने वाले भी कई बार प्रसिद्धि पाते हैं। हिंदी में डॉ. रणवीर रांग्रा, साहित्यिक साक्षात्कार लेने के कारण ही प्रसिद्ध हुए हैं। आजकल तो हिंदी में 'मेरे साक्षात्कार' क्रम से अनेक प्रसिद्ध लेखकों के साक्षात्कार किताबों के रूप में छप रहे हैं।

विशिष्ट व्यक्तियों से साक्षात्कार लेने वाले पत्रकारों या लेखकों के लिए इन विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन और इनके कार्यकलापों की अंतरंग जानकारी ज़रूरी है ताकि वे इनसे इनके जीवन एवं कार्य-व्यापार के बारे में बहुत गहराई में जाकर प्रश्न कर सकें और अपने प्रश्नों को दिलचस्प बनाकर पूछ सकें।

साधारण व्यक्तियों से साक्षात्कार

विशिष्ट व्यक्तियों से साक्षात्कारों के अतिरिक्त चुनाव आदि के समय देश के गाँवों-कस्बों में बैठे साधारण व्यक्तियों से भी साक्षात्कार लिए जाते हैं ताकि जनता की नब्ज़ पहचानी जा सके और चुनाव के पूर्वानुमान आदि लगाए जा सकें। आजकल टेलीविज़न पर इस प्रकार के साक्षात्कार लगभग प्रत्येक चैनल पर प्रसारित किए जाते हैं।

सामाजिक प्रयोजनों के लिए लिया गया साक्षात्कार

विवाहादि संबंध जोड़ने के लिए अनेक साक्षात्कार होते हैं - लड़के और लड़की का साक्षात्कार, लड़के और लड़की के अभिभावकों का साक्षात्कार आदि। कई बार तो दोनों पक्ष के संबंधियों में सामूहिक साक्षात्कार भी होता है। इन साक्षात्कारों में औपचारिकता एवं अनौपचारिकता, दोनों ही विद्यमान रहती है। इन साक्षात्कारों में दोनों पक्ष व्यक्तिगत जीवन संबंधी अधिकाधिक जानकारी लेने का प्रयास करते हैं।

इस प्रकार, साक्षात्कार जीवन का एक ऐसा हिस्सा बन गया है जो जीवन में कदम-कदम पर अपना अस्तित्व प्रमाणित करके जीवन में सम्प्रेषण की एक महत्वपूर्ण इकाई का दर्जा ग्रहण करता है।

बोध प्रश्न

1. साक्षात्कार और सामान्य बातचीत के बीच के तीन अंतरों का उल्लेख कीजिए।

   .....

   .....

   .....

2. साक्षात्कार के पाँच सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

3. नौकरी के लिए आयोजित साक्षात्कार का उद्देश्य क्या होता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास

1. अपने किसी प्रिय खिलाड़ी से पूछे जाने वाले पाँच सवाल बनाइए।
2. डीज़ल की कीमतें बढ़ने की प्रतिक्रिया जानने के लिए जन-सामान्य से पूछे जाने वाले तीन सवाल तैयार कीजिए।

4.4 संवाद

संवाद भी सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। वास्तव में व्यक्ति प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक कई तरह के संवादों से गुज़रता है। संवाद का ही एक रूप वार्तालाप भी है, जो सुबह उठते ही शुरू हो जाता है और रात तक चलता ही रहता है। साहित्यिक कृतियों में संवाद को कथोपकथन रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है, लेकिन यहाँ जीवन के व्यापक मानवीय सम्प्रेषण के निहित संवाद की अवधारणा पर विचार किया जाएगा।

मोटे तौर पर संवाद दो या दो से अधिक व्यक्तियों में किसी विषय-विशेष को लेकर किया जाने वाला वार्तालाप है। लेकिन इस वार्तालाप के कई रूप व्यवहार में प्रचलित हैं, जैसे

i) दो देशों के बीच शिखर वार्ता (संवाद)
ii) साहित्यिक या कला-संस्कृति विषयक संवाद
iii) साहित्यिक कृतियों या फिल्म-नाटक आदि में सृजित संवाद
iv) ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में दो या दो से अधिक विद्वानों का संवाद
v) व्यक्तिगत स्तर के संवाद

संवादों की कई और किस्में भी गिनाई जा सकती हैं, लेकिन इन वर्णित किस्मों में भ् संवादों के अनेक रूप मिल जाते हैं।

4.4.1 दो देशों के बीच शिखर वार्ता

संवादों का यह रूप अंतर्राष्ट्रीय महत्व रखता है। विश्व के दो या दो से अधिक देशों के बीच तनाव एवं संघर्ष हो तो ऐसे संवादों की ज़रूरत पड़ती है और अंतर्राष्ट्रीय दबावों से संघर्षरत देश ऐसे संवाद के लिए मजबूर होते हैं। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय दबाव में जुल्फिकार अली खाँ भुट्टो जो पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री थे और भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के बीच शिमला में सीधा संवाद हुआ जिसके परिणामतः दोनों देशों में 1972 का शिमला समझौता सम्पन्न हुआ। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैम्प डेविड में अरब-इज़राइल संवाद हुआ, द्वितीय विश्व-युद्ध के समय - स्तालिन, चर्चिल और आइजनहावर के बीच संवाद हुआ जिससे दुनिया की दिशा ही बदल गई। विश्व में युद्ध या शांति की दिशा का निर्धारण ऐसे ही अंतर्राष्ट्रीय संवादों से होता है।

4.4.2 साहित्यिक या कला-संस्कृति विषयक संवाद

यह अपने आपमें विशिष्ट संवाद है, जिसमें दो या दो से अधिक प्रतिभागी हिस्सा लेते हैं। इस प्रकार के संवाद में साहित्य या कला-संस्कृति से संबंधित किसी विषय पर प्रतिभागी गंभीरता से संवाद करते हैं। टी.वी:आई. टी.वी.चैनल पर दिन-भर में कई ऐसे गंभीर और महत्वपूर्ण संवाद प्रसारित किए जाते हैं। साहित्य जगत में प्रेमचंद और जैनेन्द्र के बीच हुए संवाद प्रसिद्ध हैं। अनेक पत्रिकाओं में समय-समय पर ऐसे संवाद प्रकाशित होते रहते हैं। रेडियो पर भी ऐसे संवाद प्रसारित होते हैं। इन संवादों का महत्व इस बात में है कि इनमें कतिपय अरुचिकर बातें भी रोचक ढंग से कही जाती हैं और श्रोता या पाठक निबंधात्मक शुष्कता से बचा रहता है। रोचकता वैसे भी संवाद की पहली शर्त ही है।

4.4.3 साहित्यिक रचनाओं एवं फिल्म-नाटक आदि के संवाद

संवाद का यह रूप सृजित है, यह जीवंत संवाद न होकर कल्पित संवाद है। रचनाकार ऐसे संवादों को स्थिति तथा विषयानुकूल अपनी रचना में सृजित करता है। हिंदी में ही अनेक उपन्यासों/कहानियों/नाटकों आदि में और फिल्म तथा टेलीविज़न के पर्दे पर इन साहित्यिक या कलात्मक संवादों का आनंद हम लेते हैं।

4.4.4 ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संवाद

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी संवाद के बगैर प्रगति संभव नहीं है। इन क्षेत्रों के अधिकारी विद्वान और शोध-कर्ता अपने उपलब्ध ज्ञान को तर्क की कसौटी पर परखने के लिए साथी विद्वानों से संवाद करते हैं। यह संवाद जन-सामान्य के सामने भी होता है तथा निजी स्तर पर भी। टेलीविज़न-रेडियो आदि पर भी इनका प्रसारण होता है और ज्ञान-विज्ञान की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में ऐसे संवाद प्रकाशित भी होते हैं।

4.4.5 व्यक्तिगत स्तर के संवाद

व्यक्तिगत स्तर के संवाद के अनेक रूप हैं जो सुबह से रात तक चलते ही रहते हैं। इन व्यक्तिगत संवादों में पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, पिता-पुत्र/पुत्री, मित्रों के बीच और कई बार विवाहादि अवसर पर संबंधियों के बीच सामूहिक संवाद होते हैं। यही संवाद जीवन को गतिमान रखते हैं। इन संवादों के अभाव में जीवन नीरस और शुष्क हो जाता है। राजेन्द्र यादव के एक उपन्यास में नव-विवाहिता दम्पत्ति नौ-दस वर्ष तक एक-दूसरे से बात तक नहीं करते और यह बात केवल औपन्यासिक नहीं है, जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जब किन्हीं कारणों से घनिष्ठ से घनिष्ठ संबंधों में भी संवाद समाप्त हो जाता है। संबंधों में संवाद न रहना, संबंधों के ठंडी मृत्यु की ओर जाने के समान है।

संवाद के प्रतिभागियों में यह प्रतिभा होनी चाहिए कि वे किसी भी स्तर का संवाद हो, उसमें रोचकता बनाए रखें तभी संवाद के चलते रहने की संभावना रहती है। यदि संवादों में रोचकता न हो तो संवाद बहुत कम समय में समाप्त हो जाता है। कई बार तो फिल्मों/नाटकों में अपने संवादों की विशिष्टता के कारण ही कुछ अभिनेता अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर लेते हैं। हिंदी फिल्मों में पृथ्वीराज कपूर और राजकुमार (अब दोनों स्वर्गीय), अमिताभ बच्चन अपने संवादों की विशिष्ट शैली के लिए ही विख्यात रहे हैं।

कुल मिलाकर संवाद मानव जीवन में सम्प्रेषण का एक ज़रूरी माध्यम है।

बोध प्रश्न

4. संवाद की विशेषताएँ बताइए। (तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

5. विभिन्न प्रकार के संवादों का उल्लेख कीजिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सामाजिक आदान-प्रदान

वास्तव में मानव सम्प्रेषण का अन्य प्राणियों के सम्प्रेषण से भेद ही इस बात में है कि मानव ने स्वयं को समाज बनाकर तथा फिर सभ्यताओं और संस्कृतियों के निर्माण के साथ रहना सीखा है। इसलिए मानव ने भाषा का भी निर्माण किया, जिसे बाद में लिपि के विकास के साथ लेखन के लिए प्रयोग करना भी संभव हुआ है। अब तो लेखन के माध्यम से मानव ने अपना सदियों से संचित ज्ञान भी

सुरक्षित कर लिया है और उसमें लगातार बढ़ोत्तरी भी करता जा रहा है। मानव द्वारा अर्जित ज्ञान उसकी अपनी अल्पायु (अधिकाधिक सौ वर्ष) से कहीं अधिक दीर्घायु हो गया है और मानव का अमरत्व वास्तव में उसके द्वारा अर्जित ज्ञान के माध्यम से अस्तित्व में आया है। यदि वेदव्यास (महाभारत के रचयिता), विष्णु शर्मा (पंचतंत्र के रचयिता) तथा विश्व के भी अन्य अनेक महान लेखक आज भी मानव समाज की स्मृति में जीवित हैं तो उनके इस संचित ज्ञान में ही उनके नाम का अमरत्व सुरक्षित हुआ है।

मानव के इस संचित ज्ञान की शुरूआत तो सामान्य सामाजिक आदान-प्रदान से ही हुई है। आज भी मानव जीवन का अधिकांश इस सामान्य सामाजिक आदान-प्रदान में ही बीतता है तथा इसी सामाजिक आदान-प्रदान के माध्यम से ही मानव ज्ञान संचित एवं सुरक्षित होता चलता है।

मानव जीवन में सामाजिक आदान-प्रदान के अनेक रूप और स्तर हैं। प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक उसका यह आदान-प्रदान अनवरत रूप से जारी रहता है। इस आदान-प्रदान को कुछ वर्गों में रखकर भी देखा जा सकता है। ये हैं -

i) सामान्य शिष्टाचार का आदान-प्रदान
ii) सामाजिक-सांस्कृतिक रस्मों/त्योहारों का आदान-प्रदान
iii) उच्च ज्ञान, साहित्य, कला-संस्कृति संबंधी आदान-प्रदान
iv) देश के विभिन्न क्षेत्रों/प्रांतों में आदान-प्रदान
v) अंतर्राष्ट्रीय स्तर का अदान-प्रदान
vi) व्यावसायिक क्षेत्र का आदान-प्रदान

इनके अतिरिक्त, सामाजिक आदान-प्रदान के अन्य अनेक क्षेत्र भी हो सकते हैं।

4.5.1 सामान्य शिष्टाचार का आदान-प्रदान

मानव जीवन का प्रारंभिक आदान-प्रदान सामान्य शिष्टाचार से जुड़ा है। यद्यपि इस शिष्टाचार की अवधारणा तथा व्यवहार का प्रचलन समाज के विकास के कुछ ऊँचे स्तर पर जाकर ही संभव हुआ है, और इसके लिए 'शिष्ट समाज' का अस्तित्व जरूरी माना गया है, लेकिन आज इस शिष्टाचार को सभ्य या शिष्ट समाज के सामाजिक आदान-प्रदान का ज़रूरी अंग माना जाता है।

इस सामान्य शिष्टाचार का आरंभ प्रातः उठते ही शुरू हो जाता है, जब प्रातः उठते ही बहुत से घरों में परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे का अभिवादन 'शुभ प्रभात' या 'प्रणाम' या 'गुड मॉर्निंग' से करते हैं। इस शुभ प्रभात कहने के अनेक रूप हैं। कई भारतीय घरों में छोटों द्वारा बड़ों को प्रणाम करने से इसे सम्पन्न किया जाता है तो कई घरों में अपनी-अपनी भाषा में 'शुभ प्रभात' कहकर इसे सम्पन्न किया जाता है। कई परिवारों में माँ अपने नन्हे-मुन्नों को चूमकर ही उनके प्रभात को शुभ बनाती है तो कई परिवारों में एक-दूसरे को स्नेह की दृष्टि से देखकर ही शुभ प्रभात का आदान-प्रदान पूर्ण हो जाता है।

शुभ प्रभात का ही दूसरा रूप रात को सोते समय 'शुभ रात्रि' की अवधारणा के रूप में विकसित हुआ है, जो लगभग शुभ प्रभात की तरह ही सम्पन्न होता है। हालांकि दुनिया के अनेक समाजों में इस प्रकार का सामाजिक आदान-प्रदान नहीं भी होता, लेकिन अनेक समाजों में ऐसा आदान-प्रदान होता है।

शिष्टाचार संबंधी आदान-प्रदान दिन-भर चलता रहता है। बच्चे स्कूलों में अध्यापकों या सहपाठियों के साथ, काम करने वाले अपने दफ्तरों, काम की जगह पर अपने उच्चासीन अधिकारियों तथा सहयोगियों के साथ, यह शिष्टाचार कभी नमस्कार, कभी सत श्री अकाल तो कभी किसी अन्य सांस्कृतिक रूप में निभाते हैं।

शिष्टाचार संबंधी आदान-प्रदान घर में या दफ्तर में, किसी संबंधी या मेहमान के आने पर भी निभाया जाता है और दुनिया की हरेक भाषा में इसके लिए अभिवादन संकेत बने हुए हैं।

शिष्टाचार का यह रूप विद्यार्थियों, कर्मचारियों, पार्टियों, अध्यापकों या किसी भी अन्य सामाजिक समूह की औपचारिक बैठकों के समय भी निभाया जाता है, कहीं विजय चिह्न से, कहीं सलाम से। सेना में तो अनेक अवसरों पर झंडे के प्रति या परेड के समय कई तरह के अभिवादन चिह्न प्रचलित हैं। ये सब सामाजिक आदान-प्रदान के व्यापक रूप का अंग हैं।

शिष्टाचार संबंधी आदान-प्रदान में किसी खुशी या गमी के अवसर पर तार देना, पत्र भेजना, शुभ-कामनाएँ भेजना, घर जाकर बधाई देना या अफसोस प्रकट करना आदि शामिल हैं। तारघरों में करीब पचास ऐसे संदेश संक्षेप में प्रस्तुत किए गए हैं जो सामान्य शिष्टाचार का अंग बन गए हैं। जन्मदिन या किसी उपलब्धि पर बधाई आदि भी इसी शिष्टाचार में शामिल हैं। तारघरों में हिंदी में भी यह संदेश मिलते हैं।

शिष्टाचार संबंधी सामाजिक आदान-प्रदान की यह विशेषता है कि इनमें औपचारिकता अधिक होती है और इस आदान-प्रदान के लिए कुछ विशेष शब्द या वाक्य रूढ़ हो जाते हैं, जिन्हें प्रायः सभी लोग दोहरा भर देते हैं। जैसे हिंदी में - 'शुभ प्रभात', 'शुभ रात्रि', 'नमस्कार/नमस्ते/प्रणाम', बधाई/मुबारकबाद, शोक/संवेदना आदि।

4.5.2 सामाजिक-सांस्कृतिक रस्मों/त्योहारों का आदान-प्रदान

सामाजिक जीवन में वर्ष-भर में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब लोग एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं या स्वयं उन रस्मों/त्योहारों में हिस्सा लेते हैं जो सामूहिक रूप से मनाई जाती हैं। जन्म संबंधी, विवाह संबंधी एवं देहावसान संबंधी - तीन प्रमुख रस्में मानव समाज में निभाई जाती हैं। इन अवसरों पर डाक द्वारा बधाई/शोक के अतिरिक्त लोग इकट्ठे होकर भी इन रस्मों को सामूहिक रूप से पूरा करते हैं। जैसे जन्म के अवसर पर कुछ धार्मिक रस्म, कुछ गीत गाने संबंधी सामाजिक रस्में, विवाह के अवसर पर अनेक रस्में - गीत गाना, मेंहदी लगाना इत्यादि सामूहिक रूप से सम्पन्न होती हैं। ऐसे ही मृत्यु हो जाने पर दाह संस्कार या दफनाना आदि रस्में सामूहिक रूप से निभाई जाती हैं। बाद में शोक सभा, जो कई बार धार्मिक रीति से सम्पन्न होती हैं, में भी लोग सामूहिक रूप से हिस्सा लेते हैं।

इनके अतिरिक्त, होली, दीवाली, ईद, गुरु पर्व, क्रिसमस आदि अनेक ऐसे त्योहार हैं जिन्हें सामूहिक रूप में मनाकर सामाजिक आदान-प्रदान सम्पन्न होता है और इन सभी त्योहारों के लिए हिंदी के पास समृद्ध शब्दावली है जिसका प्रयोग इन अवसरों पर आदान-प्रदान के लिए किया जाता है।

उच्च ज्ञान, कला-संस्कृति संबंधी आदान-प्रदान गोष्ठियों, रचनाओं के सामूहिक पाठ आदि के रूप में सम्पन्न होते हैं। कई बार दो या दो से अधिक व्यक्ति ऐसे महत्वपूर्ण विषयों को लेकर आदान-प्रदान करते हैं।

4.5.3 क्षेत्रों/प्रांतों के बीच आदान-प्रदान

भारत के संदर्भ में ऐसे आदान-प्रदान हिंदी भाषा के माध्यम से अधिक सम्पन्न होते हैं। प्रांतों का परस्पर सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा प्रशासनिक आदान-प्रदान चलता रहता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी के संपर्क भाषा होने के कारण ये आदान-प्रदान हिंदी भाषा के माध्यम से भी सम्पन्न किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ आदि स्थानों पर हिंदी भी अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान का माध्यम बनती है। हालांकि यह आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही सम्पन्न होता है। फिलहाल अंग्रेज़ी अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान का माध्यम है। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर भी आदान-प्रदान चलता है।

4.5.4 व्यावसायिक क्षेत्रों में आदान-प्रदान

व्यापार, कृषि, प्रौद्योगिकी, प्रशासन ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें बहु-विध रूप से सामाजिक आदान-प्रदान होता है। आजकल तो शेयर बाज़ार भी आदान-प्रदान की बड़ी जगह बन गये हैं। मुंबई या दिल्ली आदि शहरों में हज़ारों आवाज़ें शेयर बाज़ार में हो-हल्ला मचा रही होती हैं। यह आदान-प्रदान होता है। इन सभी क्षेत्रों में आदान-प्रदान के लिए विशिष्ट शब्दावली हिंदी में विकसित हो चुकी है और साथ ही साथ विकसित हो भी रही है जैसे तेजड़िए, मंदड़िए आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सामाजिक आदान-प्रदान मानव-जीवन का सबसे ज़रूरी, सबसे सामान्य और सबसे सहज अंग है जो वह कई बार बिना जाने भी यांत्रिक रूप से करता रहता है। उसके सामाजिक संस्कार ऐसे बने हुए हैं कि वह उसके लिए यंत्रचालित ढंग से कार्य करता है। वास्तव में भाषा का सबसे अधिक विकास सामाजिक आदान-प्रदान के विभिन्न रूपों के माध्यम से ही होता है और हिंदी इस क्षेत्र में भी काफी विकसित भाषा है कि उसके पास हर प्रकार के सामाजिक आदान प्रदान के लिए शब्दावली तथा वाक्य-विन्यास उपलब्ध है।

बोध प्रश्न

6. सम्प्रेषण में भाषा और लिपि का क्या महत्व है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

7. सामाजिक आदान-प्रदान के विभिन्न रूपों का उल्लेख कीजिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

इस इकाई में आपके लिए सम्प्रेषण के विविध रूपों का परिचय प्रस्तुत किया गया। भाषा तो सम्प्रेषण का माध्यम है ही अतः अनेक अन्य प्रसंगों में एवं इकाइयों में भाषा पर चर्चा की गई है। इसलिए यहाँ भाषा पर विचार न करके, सम्प्रेषण के विविध रूपों के अंतर्गत साक्षात्कार, संवाद तथा सामाजिक आदान-प्रदान की अवधारणाओं एवं उनके व्यावहारिक रूपों पर विचार किया गया।

वास्तव में सम्प्रेषण के सभी रूप एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। व्यापक रूप में ये सभी रूप सामाजिक आदान-प्रदान के ही विभिन्न प्रकार हैं, लेकिन साक्षात्कार एवं संवाद दोनों में कुछ विधागत विशिष्टताएँ विकसित हो गई हैं, जबकि सामाजिक आदान-प्रदान इतना व्यापक है कि इसके अनेक रूप अभी रूढ़िगत विधा का रूप नहीं ले पाए हैं और न ही शायद इसकी ज़रूरत भी है। आप सम्प्रेषण के व्यापक और सीमित रूपों से इस इकाई में परिचित हुए हैं।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) सामान्य बातचीत अनौपचारिक होती है; साक्षात्कार औपचारिक होता है।
   (ख) सामान्य बातचीत का कोई निश्चित विषय नहीं होता, साक्षात्कार विषय-आधारित होता है।
   (ग) साक्षात्कार प्रश्नोत्तर शैली में होता है; सामान्य बातचीत में इसका कोई बंधन नहीं होता।

2. (क) औपचारिक सम्प्रेषण
   (ख) परस्पर संवाद
   (ग) दो पक्षों का शामिल होना
   (घ) गंभीर विषय
   (ङ) प्रश्नोत्तर शैली

3. नौकरी के लिए आयोजित साक्षात्कार में उम्मीदवारों की योग्यता, तुरंत सोचने की शक्ति और वाक्पटुता की जाँच की जाती है। इसमें उम्मीदवार की सर्वांगीण प्रतिभा की जाँच की जाती है। देखिए भाग 4.3.1।

4. संवाद में दो या दो अधिक व्यक्ति शामिल होते हैं। रोचकता संवाद का सबसे बड़ा गुण और अनिवार्य विशेषता है।

5. अंतर्राष्ट्रीय संवाद, साहित्यिक संवाद, कला-संस्कृति संवाद, साहित्य में संवाद ज्ञान-विज्ञान संवाद, व्यक्तिगत संवाद।

6. भाषा से सम्प्रेषण अर्थवान होता है और इससे सामाजिक आदान-प्रदान में मदद मिलती है। लिपि इस सम्प्रेषण को स्थायित्व प्रदान करती है। (देखिए भाग 4.5)

7. (क) सामान्य शिष्टाचार
(ख) सांस्कृतिक आदान-प्रदान
(ग) शैक्षिक आदान-प्रदान
(घ) विभिन्न क्षेत्रों/प्रांतों के बीच आदान-प्रदान

} देखिए भाग 4.5